© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 10 | October – December 2017

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में यथार्थवाद और सामाजिक सुधार

डॉ. राम अधार सिंह यादव
Associate Professor, Department of Hindi
S.M. College Chandausi, Sambhal (U.P.)

सारांश

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के यथार्थवादी और समाज सुधारक साहित्यकारों में से एक थे, जिनके उपन्यासों ने भारतीय समाज की जटिलताओं और समस्याओं को गहराई से उजागर किया। इस शोध पत्र का उद्देश्य मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों में यथार्थवाद और सामाजिक सुधार के तत्वों का विश्लेषण करना है। प्रेमचंद के उपन्यासों में यथार्थवाद केवल साहित्यिक शैली नहीं है, बल्कि यह उनके समाज सुधारक दृष्टिकोण का भी प्रतीक है। प्रेमचंद के उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं जैसे गरीबी, जातिवाद, शोषण, स्त्री अधिकार, और शिक्षा की कमी को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। 'गोदान', 'सेवासदन', 'निर्मला', और 'गबन' जैसे उपन्यासों में उन्होंने ग्रामीण और शहरी जीवन की वास्तविकताओं को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद का यथार्थवाद उनके पात्रों की सजीवता और उनके संवादों की स्वाभाविकता में परिलक्षित होता है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक सुधार के संदेश दिए। उन्होंने अपने साहित्य में आदर्श और यथार्थ का संतुलन बनाए रखा, जिससे पाठकों को समाज की वास्तविकताओं का सामना करने और उन्हें सुधारने की प्रेरणा मिली। उनके उपन्यासों में निहित सामाजिक सुधार के संदेश आज भी प्रासंगिक हैं और समाज को दिशा देने में सक्षम हैं।

मुख्य शब्द: मुंशी प्रेमचंद, यथार्थवाद, सामाजिक सुधार, हिंदी साहित्य, उपन्यास

परिचय

प्रेमचंद बीसवीं शताब्दी के भारत के एक बहुत प्रसिद्ध उर्दू और हिंदी लेखक हैं। प्रेमचंद का जीवन इतिहास किसी भी सामान्य व्यक्ति की तरह है। लेकिन जो चीज उन्हें खड़ा करती है, वह उनके जीवनकाल में रचित कई कार्य हैं। उन्हें अभी भी बहुत उत्साह और प्रशंसा के साथ पढ़ा जाता है। हालाँकि उनके जीवन में आर्थिक तंगी थी, लेकिन उनके पास उनकी रचनाओं और रचनाओं का समृद्ध संग्रह था। आधुनिक हिंदी और उर्दू सामाजिक कथाओं के अग्रणी, मुंशी प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने लगभग 300 कहानियाँ और उपन्यास लिखे। उनके सबसे प्रसिद्ध उपन्यास हैं सेवासदन, रंगमंच, गबन, निर्मला और गोदान। प्रेमचंद की अधिकांश सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ उनकी 250 या इतनी छोटी कहानियों के बीच पाई जानी हैं, जिन्हें मानसरोवर शीर्षक के तहत हिंदी में संग्रहित किया गया है। उनके तीन उपन्यास फिल्मों में बनाए गए हैं। प्रेमचंद का साहित्यिक जीवन उर्दू में एक फ्रीलांसर के रूप में शुरू हुआ। 20 वीं सदी के हिंदी और उर्दू साहित्य के एक प्रसिद्ध लेखक, प्रेमचंद को भारत के टॉल्स्टॉय

के रूप में भी जाना जाता है। उनके साहित्यिक आउटपुट में तीन सौ से अधिक लघु कथाएँ और कई उपन्यास शामिल हैं जहाँ मुख्य रूप से आम आदमी के जीवन के चित्रण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वास्तव में, प्रेमचंद को एक साहित्यिक शैली के रूप में उपन्यास के आकार के लिए एक महत्वपूर्ण भारतीय साहित्यकार माना जाता है। उन्हें प्रगतिशील लेखन के संस्थापक के रूप में भी जाना जाता है जिसने भारतीय साहित्य में एक नए युग को चिह्नित किया। ऑस्ट्रेलियाई मूल के लेखक जैक लिंडसे का कहना है कि यह प्रेमचंद की भावुक सहानुभूति है, लोगों की पीड़ा के प्रति उनकी निकटता और तत्काल ऐतिहासिक मुद्दे की उनकी भावना है जिसने उन्हें हिंसा के विविध रूपों से जूझ रहे मानवता के यथार्थवादी चित्रण की शुरुआत की। वास्तव में, प्रेमचंद की साहित्यिक रचनाएँ, निर्मला और गोदान को छोड़कर, आदर्शवाद से भरे मोहनदास के। गांधी के विचारों से बहुत प्रभावित हैं। डॉ। कमलकिशोर गोयंका ने बतायारू प्रेमचंद की साहित्यिक रचनाओं पर महात्मा गांधी और मार्क्स का प्रभाव एक बार में देखा जा सकता है। प्रमुख कार्य वह उनके ग्लैमर, आसान पैसे, विलासिता और अन्य कार्यक्रम मे भागीदारी से मोहित हो जाती है। यहाँ, वह जीवन को जीने और आसान होने के लायक पाता है और इसके परिणामस्वरूप, वह वेश्याओं के एक बैंड में शामिल हो जाता है, जो कि दुष्चक्र का हिस्सा बन जाता है। उसका पति गजाधर उसे घर से निकाल देता है जो बाद में पछताता है और जीवन के लिए बीमार हो जाता है और भटकते हुए संन्यासी बनने के लिए सांसारिक और भौतिकवादी जीवन को त्याग देता है। वह पछतावे से भरा है क्योंकि वह अपनी पत्नी को कभी खुश नहीं कर सकता था। इसके विपरीत, सुमन को अपनी गलती का एहसास होता है क्योंकि वेश्या का जीवन वह आसान काम नहीं है जो उसने पहले सोचा था। वह वेश्या होने का अर्थ समझ गई है और एक संस्था सेवासदन से जुड़ती है, जो अपने जैसे असहाय और बेघर लोगों के लिए धर्मार्थ घर है। गहरे स्तर पर, उपन्यास को एक समाज में रहने वाले पुरुषों और महिलाओं के मनोवैज्ञानिक शरीर रचना विज्ञान के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो उन्हें अंधे और अप्रचलित परंपरा के घूंघट के तहत सम्मानजनक स्थान से वंचित करता है लेकिन यह उपन्यास अन्य पात्रों के दर्द और पीड़ाओं को भी दर्शाता है जैसे कि कृष्णचंद्र, पदमसिंह, विट्ठलदास, मदनसिंह, सदनसिंह, भोलीबाई, सुभद्रा वगैरह जो अपने आप को एक या दूसरे तरीके से उपेक्षित और मामूली महसूस करते हैं।

सामाजिक समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण

मुंशी प्रेमचंद का प्रमुख काम माना जाता है जो सामाजिक यथार्थवाद के लक्षणों से भरा है। निर्मला विवाह जैसे संवेदनशील सामाजिक मुद्दों से निपटकर मौजूदा भौतिकवादी सामाजिक मानदंडों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। हमारा अध्ययन समकालीन भारतीय समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता, निर्भरता, अस्वस्थ सामाजिक संबंधों और वर्ग उत्पीड़न की पड़ताल करता है जो अंततः परिवारों के विघटन का मूल कारण बन जाता है। वर्तमान अध्ययन में उन्हें महत्वपूर्ण विश्लेषण के फ्रेम मे लाने वाले चरित्र का विश्लेषण करना है, जो अपने सामाजिक सम्मान को बनाए रखने के लिए किसी भी कीमत पर आवश्यक सामाजिक मूल्यों से

चिपके रहने की प्रवृत्ति विकसित करते हैं। लेकिन इसके बावजूद, पात्रों को अधिक पीड़ित होने के लिए किस्मत में है, जिससे चिकनी चल रहे परिवारों का पतन हो रहा है। गीतांजलि पांडे, प्रमुख भारतीय नारीवादी आलोचकों में से एक, का तर्क हैरू निर्मला शादी की समस्याओं, दहेज की मजबूरी और धन–दौलत की ताकत से पैदा हुई समस्या से जूझती है और इसके उत्पादन में भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक परिणामों का एक पूरा सेट होता है। निर्मला अपने पुराने पति के संदेह का केंद्र बन जाती है, जो पहले वाली पत्नी से अपने बेटे के प्रति लगाव में घबराहट देखती है। निर्मला अंततः मर जाती है, एक बर्बाद जीवन को समाप्त करती है। ख्गीतांजलि 1989रू मुंशी प्रेमचंद ने तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों को उजागर करके समकालीन भारतीय समाज का वास्तविक रूप से प्रतिनिधित्व किया है, जैसा कि ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के सामंतवाद ने बनाया था। आम लोगों की बोली में, वह स्पष्ट रूप से उपन्यास में किसान वर्गों की समस्या को उजागर करता है, जिन्हें बालचंद्र जैसे सामंती प्रभु के हाथों में वर्गीकृत किया जाता है। जैसा कि वह साहित्य को एक ऐसे काम के रूप में देखता है जो जीवन के सच्चे और अनुभवों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है, वह समकालीन भारतीय समाज की सच्चाइयों और अनुभवों को सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, उपनिवेशवाद, रूढ़िवाद, जमींदारी, ऋण, गरीबी, दुर्दशा, धार्मिकता आदि को सामने लाता है। उन्हें उनके लेखन का मुख्य विषय बनाकर वास्तविकता के धरातल में ला दिया। पूंजीवादी समाज और मजदूर वर्ग की दुर्दशा की उम्मीद उपरोक्त चर्चा इस तथ्य को स्पष्ट रूप से चित्रित करती है कि उनका परिवार अपनी मर्जी से कार्य करने के लिए स्वतंत्र नहीं है, यह बुर्जुआ मानदंडों और मूल्यो द्वारा निर्धारित पैरामीटर के भीतर बाध्य है। पूंजीवाद द्वारा निर्मित समाज की मांगों को पूरा करने के लिए परिवार सामाजिक मानदंडों और मूल्यों पर अपना निर्णय लेने के लिए मजबूर है। निर्मला के विवाह की तैयारी के दौरान परिवार का खर्च दस दिनों के भीतर पांच हजार से दस हजार से अधिक हो गया। इस तथ्य के कारण, कल्याणी अपनी बेटी की शादी के खर्च को बढ़ाने से डरती है। वह बढ़ते खर्च पर भड़क जाती है और अपने पति को इस बात से अवगत कराने का साहस करती है कि खर्च एक महीने के भीतर शादी की तैयारी पूरी होने तक एक लाख की सीमा को पार कर सकता है। हालांकि, उदयभानु परिवार के ब्रेडविनर चल रही तैयारी के आधे होने की संभावना नहीं है। वह मानता है कि उसे इस कार्य को अच्छी तरह से पूरा करना है ताकि समाज की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। वह अपने परिवार को समाज को हंसते हुए देखना नहीं चाहता है। उदयभानु किसी भी कीमत पर अपने परिवार की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए दृढ़ संकल्पित है। वह सामाजिक आलोचना से डरता है और मजाक का पात्र नहीं बनना चाहता। वह इस तथ्य के बारे में शांत है कि पूंजीवादी समाज निश्चित रूप से अपने परिवार की स्थिति को कम कर देगा यदि वह दूल्हा पक्ष से मेहमानों के लिए बेहतर व्यवस्था का प्रबंधन करने में विफल रहता है। इसलिए, प्रचलित पूंजीवादी सामाजिक संरचना उसे निर्मला की शादी में और अधिक पैसा लगाने के लिए मजबूर करती है। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि निर्मला के विवाह पर अत्यधिक खर्च आने वाले दिनों में परिवार के अन्य सदस्यों के अस्तित्व को संकट में डाल देगा क्योंकि

परिवार को भारी आर्थिक बोझ उठाना पड़ता है। इसका कारण यह है कि अभी भी उदयभान की अल्प आय पर निर्मला के माता–पिता के रहने के लिए शेष जीवन के साथ भविष्य में एक बेटे और एक बेटी की शादी होनी है। उदयभान की अल्प आय को छोड़कर परिवार के पास आय का कोई अन्य वैकल्पिक स्रोत नहीं है। परिवार के पास कोई निजी संपत्ति नहीं है और उदयभान की आय निर्मला के विवाह के कर्ज को वसूलने के लिए पर्याप्त नहीं है। इस तथ्य के कारण, परिवार के जीवन की निम्नगुणवत्ता का शिकार होने की संभावना है क्यो ंकि यह बुनियादी और साथ ही परिवार के सदस्यों की अतिरिक्त जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है। परिवार का क्षरण एक परिवार की आवश्यक मांगों को पूरा करने में विफलता के साथ–साथ शुरू होता है जो अंततः परिवार के संघर्ष का कारण बनता है जिसके परिणामस्वरूप परिवार का विघटन होता है। इस प्रकार, उनके उपन्यास निर्मला में मुंशी प्रेमचंद द्वारा दर्शाया गया समाज, सामंती प्रभुओं और जमींदारों द्वारा शासित है, जो इसे उच्च स्थिति तक बढ़ाकर विवाह की व्यवस्था को प्राथमिकता देते हैं। समकालीन भारतीय समाज में उपन्यास के रूप में चित्रित लोगों के उच्च वर्ग के पास अपने सामाजिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए शादी के ऐसे सामाजिक अभ्यास में बड़ी राशि खर्च करने की प्रवृत्ति है। निम्न वर्ग के लोग जो अपनी अल्प आय पर अपनी आजीविका को बनाए रखने के लिए बाध्य हैं, वे इस तरह की सामंती धारणाओं से बहुत प्रभावित होते हैं और इस प्रकार वे विवाह के अवसर पर अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा के रखरखाव के लिए किसी भी तरह से राशि आवंटित करते हैं, हालांकि पात्र जैसे बाबू उदयभान निम्न मध्यम वर्ग से हैं, फिर भी वे अरेंज मैरिज की ऐसी सामंती प्रवृत्ति और उच्च खर्च की अपनी विशिष्ट विशेषता से अलग नहीं रह सकते क्योंकि वे पूरी तरह से निर्देशित हैं और सामंती धारणाओं से प्रभावित हैं। पाठ में इसके अलावा यह भी कहा जा सकता है कि परिवार के विघटन का मूल कारण पुरुषों और महिलाओं के बीच असमान आर्थिक संबंध हैं। उपन्यास में प्रमुख महिला पात्र जैसे निर्मला, कल्याणी, रुक्मीमी, कृष्णा और रंगालीबाई आर्थिक रूप से पुरुषों पर विशेष रूप से उनके पति पर निर्भर हैं। मूल रूप से, पूंजीवाद में समाज विशेष रूप से यह मानते हैं कि निजी संपत्ति के मालिक पुरुष हैं जो आर्थिक असमानता, निर्भरता और अंततः पुरुषों और महिलाओं के बीच अस्वास्थ्यकर सामाजिक संबंधों को जन्म देते हैं। यह वर्तमान सामाजिक संदर्भ में महिलाओं के उत्पीड़न की जड़ बन जाता है जो परिवार के विघटन को जन्म देता है। उपन्यास पारिवारिक जीवन में स्त्री के स्थान को दर्शाता है। निर्मला घरेलू कामों में ही सीमित रहती हैं जबकि उनके पति समाज के बाहरी क्षेत्रों में आर्थिक रूप से सक्रिय हैं। उसकी स्थिति केवल एक घरेलू घर की पत्नी तक ही सीमित है और आर्थिक गतिविधियों से वंचित है। उसकी क्षमता उसके सौतेले बेटों की देखभाल और रसोई के काम करने के साथ समाप्त होती है।

सामाजिक बुराइयों का चित्रण गोदान भी ग्रामीण भारत की दलित महिलाओं की भयानक स्थितियों पर ध्यान केंद्रित करता जैसा कि उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। भारत में, विशेष रूप से ग्रामीण भारत में, महिलाओं को उन पुरुषों द्वारा यौन और

घरेलू हिंसा को सहन करने के लिए मजबूर किया जाता है जो उन्हें शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से बिखर जाते हैं। भारतीय महिलाएं दयनीय और दयनीय थीं। इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित किया जाता है कि संकट के समय में, ये महिलाएं लंबे समय तक खड़ी रहती हैं और स्थितियों के सबसे जटिल तरीके से भी सफलतापूर्वक निपटने के द्वारा अपनी सूक्ष्मता को साबित करती हैं। हमारे पास उपन्यास में कुछ ऐसी दलित महिला पात्र हैं। वे झुनिया और सेलिया हैं। ये महिलाएं असमान लिंग संबंधों के कारण यौन उत्पीड़न, आर्थिक शोषण और सामाजिक सामाजिक दासता का शिकार हैं। गायत्री चक्रवर्ती ने अपने निबंध में सबाल्टर्न बोल सकते हैं? हाशिए, शोषितों और शोषितों के दृष्टिकोण के प्रतिनिधित्व, प्रतिरोध, सांस्कृतिक दासता के बारे में सवालों की एक श्रृंखला को आगे लाता है। वह कहती है कि बाल्टर्न बोल नहीं सकता। ऐसी निम्न जाति की महिलाएं अपने पति, प्रेमी या उच्च जाति के पुरुषों द्वारा शारीरिक और मौखिक शोषण का शिकार होती हैं। ये महिलाएं बहुत दयनीय और दयनीय जीवन जीती हैं क्योंकि वे हर जगह पुरुष लोक द्वारा खारिज कर दी जाती हैं। उन्हें सार्वजनिक रूप से बदनाम किया जाता है, आर्थिक क्षेत्र में अवैतनिक रखा जाता है और यौन उत्पीड़न किया जाता है। क्रूर पितृसत्ता एक बड़ी समस्या है जिसे वे अपने जीवन के पूरे दौर में पूरा करते हैं। गोदान में, दलित महिला जिसे सेलिया कहा जाता है, को उच्च जाति के ब्राह्मण मातदीन द्वारा छेड़छाड़ और बलात्कार किया जाता है जो उसकी क्रूरता का इलाज करता है और उसे उसके घर से ऐसी हालत में फेंक देता है जब वह गर्भवती होती है और कहीं जाने की स्थिति में नहीं होती है। यह देखा गया है कि प्रेमचंद की महिलाएँ अन्यायपूर्ण वर्ग के भेदभाव पर आधारित समाज की शिकार हैं। वे अपने लिंग के कारण अपमान, अभाव और अलगाव झेलते हैं। वे दोहरे उत्पीड़न का सामना करते हैंरू पहला दलित और दूसरा महिलाओं का होना। दलित होने के नाते, वे असमान जाति भेद के कारण पीड़ित हैं और एक महिला होने के नाते, वे अपने घरों और बाहर की दुनिया में पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के शिकार हैं। इसलिए उन्हें तीन स्तरों पर अलग–थलग कर दिया जाता है – जाति, वर्ग और लिंग की स्थिति जो उनके खिलाफ हिंसा को बेलगाम कर देती है। हर जगह उनके साथ अन्याय किया जाता है और वे अलग–थलग और अलग–थलग महसूस करते हैं। मुल्क राज आनंद जैसे प्रेमचंद समाज के उच्च वर्ग विशेषकर द हिंदू ब्राह्मण के पाखंड को उजागर करते हैं। एक प्रसंग में प्रेमचंद ने दातादीन जैसे ब्राह्मण के पाखंड का सुंदर तरीके से वर्णन किया है। दातादीन ने दी होरी को धमकीरू आपको उस दुष्ट लड़की को अपने घर में नहीं रखना चाहिए। यदि दूध में एक मक्खी गिरती है, तो पुरुष उसे बाहर निकाल देते हैं और पीने से पहले उसे फेंक देते हैं। जरा सोचिए कि आपका किस तरह से अपमान किया जा रहा है और उसका उपहास किया जा रहा है। अगर आपके घर में कोई नहीं रहता तो ऐसा कुछ नहीं होता। लड़के अक्सर ऐसी गलतियां करते हैं। लेकिन अब चीजों को बेहतर बनाने का कोई तरीका नहीं है जब तक आप पूरी जाति के लिए दावत नहीं देते और ब्राह्मणों को भोजन नहीं कराते। यदि आप उसे अंदर नहीं ले गए हैं, तो इसमें से कुछ भी नहीं हुआ होगा। होरी का मूर्ख, बेशक, लेकिन आप कैसे धोखा दिया? ख्२०१२रू १५३–१५४, अंत में, यह धनिया थी

जो साहस दिखाती है और सेलिया का समर्थन करने के लिए आगे आती है। वह उसे आश्रय प्रदान करता है, सेलिया के पिता के कार्यों और उसके समुदाय का समर्थन करता है। धनिया ने सही तर्क दिया, हमने क्या देखा है कि हमने जाति से डरना चाहिए? क्या हमने किसी को लूटा है? क्या हमने किसी को उसकी संपत्ति से बाहर निकाल दिया है? महिला को रखना कोई पाप नहीं है – पाप उसे छोड़ने में है। बहुत अच्छा होना भी गलत हो सकता है ... फिर सूअर भी आप पर रौंदने लगता है। 2012रू 161, चरित्र चित्रण के माध्यम से समकालीन समाज का प्रतिबिंब एक सच्ची सामाजिक तस्वीर देखी जा सकती है जिस तरह से प्रेमचंद ने अपने पात्रों को चित्रित किया है चाहे वह पुरुष हो या महिला। वे जीवित ग्रामीण लोगों को गरीबी और न्याय के लिए शिकायत और पीड़ा देते हुए दिखते हैं। हम भारत की स्वतंत्रता के कई वर्षों के बाद भी आज के बाद के समय में ऐसे लोगों को देश में पाते हैं। गोदान में प्रेमचंद द्वारा ऐसे पात्रों की वस्तुनिष्ठ प्रस्तुति उपन्यास को और अधिक रोचक और आकर्षक बनाती है। उपन्यास के अधिकांश पात्र समकालीन भारतीय समाज के प्रतिनिधित्व के अलावा कुछ नहीं हैं। होरी, मुख्य नायक, को भारतीय किसान के प्रतिनिधि के रूप में वर्णित किया जाता है, जो सामाजिक दृढ़ संकल्प का शिकार है, लेकिन मानवीय और ईमानदार, अपने पोषित मूल्य और गाय के रूप में, जीवन भर का सपना। दूसरी ओर, धनिया, एक तेज–तर्रार, अभी तक कोमल, करुणामय और करुणामय है, जो अपने उत्पीड़को के खिलाफ खुले विद्रोह में, फिर भी कुछ बुनियादी तरीके से पारंपरिक है, पारंपरिक और अनपढ़ ग्रामीण महिलाओं के सर्वश्रेष्ठ मॉडल का प्रतिनिधित्व करता है। गोबर क्रोध और भय का प्रतिनिधित्व करने वाला बढ़ता हुआ युवा हैय महत्वाकांक्षा और कायरता। दातादीन गाँव में पुजारी ब्राह्मण वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं और सिलिया दलित समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। राय साहेब (जमींदार) एक और चरित्र है जो दो तरीकों के बीच झूलता है। वह जीवित रहने के लिए लगभग पूरी तरह से अपनी संपत्ति पर निर्भर करता है और अपने गरीब किरायेदारों को कुचलने और शोषण करने से ऊपर नहीं होता है जब उसे पैसे की आवश्यकता होती है, फिर भी लेखक यह दिखाने के लिए उत्सुक है कि वह वास्तव में बदमाश नहीं है – शायद केवल परिस्थितियों का शिकार है। मेहता बुद्धिजीवियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि मालती पश्चिमी शिक्षित शहरी भारतीय महिला के लिए करती हैंय खन्ना औद्योगिक पूंजीवाद के मूल्यों का प्रतीक हैं। इस प्रकार, प्रत्येक चरित्र, एक या दूसरे तरीके से, भारतीय ग्रामीण लोक की एक सच्ची छवि बनाता है। उपन्यास के इस समग्र निर्माण के कारण यह ठीक है कि गोदान को कई आलोचकों ने गद्य महाकाव्य माना है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद के उपन्यास, जाहिर तौर पर इस दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध की भावना को बढ़ावा देते हैं। गांधीवादी काल के सामाजिक–राजनीतिक सह आर्थिक मुद्दों को भी कर्मभूमि के भीतर निपटाया जाता है। अमरकांत पर गाँधीवाद के प्रभाव को उपन्यास में सूत कताई की अपनी क्रिया के माध्यम से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जो गांधीवादी स्वराज का कार्डिनल सिद्धांत

था। उपन्यास के अंत में, अमरकांत को हिंसक कार्रवाई और व्यवहार की निरर्थकता का एहसास होता है। उसे इतने लोगों की हत्या पर पछतावा है। इस तरह, अमरकंटक के पश्चाताप ने उन्हें क्रांति और गांधीवाद की कठोर प्रकृति के बीच पकड़ा। दूसरी ओर, इस उपन्यास को एक राजनीतिक उपन्यास के रूप में पढ़ा जा सकता है, जो अमीर और जमींदारों, उद्योगपतियों और उच्च वर्ग द्वारा समर्थित ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोगों के संघर्ष को प्रस्तुत करता है। सामाजिक परिवर्तन और बौद्धिक किण्वन की प्रवृत्ति और प्रेमचंद से लेकर अमिरत लाल नागर और फनिश्वर नाथ रेणु तक एक परिवर्तन विकासवादी रहा है। वे सभी किसी भी विशिष्ट संप्रदाय दर्शन में विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि उनका मानवीय मूल्यों में दृढ़ विश्वास है। इन उपन्यासकारों के कार्यों की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि उनकी साहित्यिक प्रतिभा का विकास कंक्रीट से अमूर्त और वास्तविक से आदर्श तक एक चिह्नित आंदोलन को दर्शाता है। प्रेमचंद का अंतिम उपन्यास गोदान (1936) अपने पहले के कार्यों से एक गरीब किसान के जीवन को अलग तरीके से पेश करता है। समय बीतने के साथ, प्रेमचंद मनी लेंडिंग सिस्टम के बुरे परिणामों के बारे में पूरी तरह से सचेत हो गए थे। दूसरी ओर, उपन्यास उस समय आया जब भारतीय समाज सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संकटो से गुजर रहा था। इस निर्णायक मोड़ पर, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लगे हुए थे। इसलिए, गोदान, एक सामाजिक दस्तावेज है, जो भारतीय किसानों की आर्थिक स्थितियों को वास्तविक रूप से दर्ज करता है। होरी, नायक, एक किसान है संदर्भ ग्रन्थ सूची जो सिस्टम के खिलाफ आवाज उठाने में सक्षम नहीं है और जीवन भर पीड़ित है। वह धर्म के झूठे विचारों में फंस गया है और इसीलिए वह धन उधारदाताओं द्वारा शोषण का विरोध करने में सक्षम नहीं है। वह एक कट्टर चरित्र है जो भारतीय किसानों के अनिवार्य लक्षणों का प्रतिनिधित्व करता है। होरी किसान का प्रतिनिधित्व करता है जिसका जमींदारों और साहूकारों जैसे संपन्न लोगों द्वारा शोषण किया गया है। होरी खुद को उसी उपन्यास में चित्रित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- डॉ० रामचन्द्र तिवारी - हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 1992 पृष्ठ 401

2- डॉ० इन्द्रनाथ मदान- प्रेमचन्द एक विवेचन, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली-2006 पृष्ठ 123

3 डॉ लक्ष्मीनारायण लाल - हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, साहित्य भवन इलाहाबाद, 1953, पृ०131

4. प्रो० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी- गद्य के नये प्रतिमान, लोकभारतीय प्रकाशन इलाहाबाद 1996, पृ० 10